बिहार सरकार

पशु एवं मत्स्य संसाधन विभाग

(पशुपालन प्रभाग)

विश्व प्राणिरूजा दिवस

- विश्व प्राणिरूजा दिवस प्रतिवर्ष 6 जुलाई को मनाया जाता है। इसका उद्देश्य पशुजन्य रोगों की विकराल समस्या के प्रति विश्वभर में जागरूकता फैलाना है।
- विश्व प्राणिरूजा दिवस हमारे लिये विशेष रूप से इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि 6 जुलाई, 1885 ई0 को लुईस पास्चर नामक वैज्ञानिक जिन्हें 'फादर ऑफ बैक्टेरियोलॉजी' भी कहा जाता है, ने पहली बार एक जूनोटिक बीमारी के विरूद्ध जोसेफ मेस्टर नाम के 14 वर्षीय बच्चे पर टीका का सफलता पूर्वक प्रयोग कर उसकी जान बचाई थी, जिसे एक पागल कुत्ता ने बुरी तरह घायल कर दिया था। यह दिवस मनाकर हम उस दिन को भी याद करते हैं।

प्राणिरूजा (Zoonosis) क्या है

➢ वैसी बीमारियाँ जो जानवरों से मनुष्यों में एवं मनुष्यों से जानवरों में फैलती हो, को प्राणिरूजा रोग कहते हैं।

जूनोटिक बीमारियाँ के प्रकार

➢ वायरल (जीवाणु) प्राणिरूजा :– रेबीज, इन्फ्लूएंजा
➢ बैक्टिरियल (विषाणु) प्राणिरूजा :– ब्रुसेलोसिस, लाइम डिजीज
➢ पारासिटिकल (परजीवी) प्राणिरूजा :– टेपवर्म आदि

आम जूनोटिक बीमारियाँ

➢ यक्षमा, प्लेग, बिल्ली की खरोंच के कारण होने वाला बुखार, खुजली, रेबीज, क्यू फीवर, टिक पक्षाघात, दाद, सालमोनेलोसिस, लेप्टोस्पायरोसिस, लाइम डिजिज, कम्पाइलोबैक्टर संक्रमण, जियार्डिया संक्रमण आदि बीमारियाँ जानवरों से मनुष्यों में फैलती है।
➢ संक्रामक बीमारियों की लगभग 60 प्रतिशत बीमारी जुनोटिक महत्व की है लेकिन जानकारी के अभाव में लोग इसे समझ नहीं पाते हैं। जुनोटिक बीमारियों का खतरा दिन प्रतिदिन बढ़ रहा है।

जूनोटिक बीमारियाँ फैलने के कारण

➢ वनों की कटाई और पर्यावरण प्रणालियों के विनाश के कारण मनुष्यों का वन प्राणियों के सम्पर्क में आना।
➢ विश्व के कई क्षेत्रों में झाड़ी के मांस (Bush meat) का सेवन SARS एवं HIV का मुख्य कारण है।
➢ पालतू जानवरों एवं वन्य जीवों के उपचार में लगे पशु चिकित्सकों, पशु देखभालकर्ता एवं प्रयोगशाला में कार्य करने वाले कर्मी।
➢ मच्छड़ या टिक्स ऐसी बीमारियों का एक महत्वपूर्ण कारक।
➢ पशु प्रदर्शनी, पालतू पशु स्टोर, चिड़ियाघर, प्राकृतिक पार्क आदि में ऐसी बीमारियों के फैलने का खतरा अधिक।
➢ जुनोटिक बीमारी लक्षण प्रकट होने के बाद शत्प्रतिशत प्राणघातक है।

प्राणिरूजा रोग के आर्थिक प्रभाव

- पिछले दशक में एवियन इन्फलूएंजा के कारण एशिया में करीब 200 मिलियन पक्षियों का कत्ल किया गया। परिणामस्वरूप 10 अरब अमेरिकी डॉलर से ज्यादा का नुकसान हुआ।
- विश्व स्वास्थ्य संगठन के द्वारा अनुमान्यतः 500–900 मिलियन लोग पशुधन रखते हैं जिनकी जीविका पशुपालन पर निर्भर है।

प्राणिरूजा रोग को रोकने के लिए कुछ महत्वपूर्ण चरणों का पालन किया जाना चाहिए

- प्राणिरूजा बीमारियों के ईलाज या रोकथाम हेतु टीका एवं उत्पादों की विस्तृत श्रृंखला उपलब्ध है।
- पशुओं के लिए विशेष स्वास्थ्य प्रबंधन समाधान प्रदान करने के लिए पशुपालकों, पशु चिकित्सकों, मानव चिकित्सकों एवं पालतू पशुओं के मालिकों के साथ मिलकर बेहतर स्वास्थ्य प्रबंधन की आवश्यकता है।
- अपने घरों, कार्यालयों, सार्वजनिक स्थलों आदि को स्वच्छ और प्रदूषण मुक्त रखें।
- मांसाहारी भोजन को अच्छे से पकाएं। पेयजल की स्वच्छता का ध्यान रखें। भोजन व जल को सदा ढ़ककर रखें और विशेषकर मांसाहार करने के लिए सभी आवश्यक सावधानियां बरतें।
- पालतू पशुओं को आवश्यक टीके लगवाएं और उनसे अनावश्यक घनिष्टता से बचें।
- विश्व प्राणिरूजा दिवस पर प्रतिवर्ष एक थीम आधारित कार्यशाला का आयोजन कर ऐसी बीमारियों को रोकने और नियंत्रित करने के उपायों के प्रति लोगों को जागरूक किया जाना चाहिए।
- विश्व प्राणिरूजा दिवस इन बीमारियों के बारे में जागरूकता बढ़ाने और दुनिया भर में ऐसी बीमारियों के प्रकोप की रोकथाम, नियंत्रण और प्रबंधन के लिए अनुसंधान, स्वास्थ्य नीति एवं योजनाओं का समर्थन करने के कारणों का एक महत्वपूर्ण तरीका है।

पशुपालन सूचना एवं प्रसार कार्यालय, बिहार, पटना द्वारा जनहित में प्रचारित।